चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	29.8.24	12	3-8

कार्यक्रम

हकृवि में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

'पशुओं को स्वस्थ्य रखने के लिए हरा चारा जरूरी'

हरिभूमि न्यूज ▸▸| हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पशुपालन एवं डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सीईएएच, बैंगलुरू और रीजनल फोडर स्टेशनकी ओर से 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (एएफएमआई-2024) विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज प्रतिभागियों के साथ। फोटो :हरिभूमि

कार्यशाला का शुभारंभ वीसी प्रो. बीआर काम्बोज ने बुधवार को किया। संयुक्त आयुक्त (राष्ट्रीय पशुधन मिशन) डॉ. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक (सीईएएच) डॉ. महेश पीएस भी मौजूद रहे। कुलपति काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया। उन्होंने पशु चिकित्सा विज्ञान और कृषि में प्रशिक्षित युवाओं से इस क्षेत्र के बेहतर भविष्य के लिए चारा क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने का आग्रह किया। कुलपति ने कहा कि देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन है लेकिन हम चारा फसलों की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध करवाकर, चारा उत्पादन की नई-नई तकनीक विकसित करके, विभिन्न क्षेत्रों के लिए चारा फसलों के उचित फसल चक्र विकसित करके, बहुवर्षीय चारा फसलों की खेती करके इसका बेहतर प्रबंधन कर सकते है जिससे न केवल हमारे पशुधन की उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। डॉ. महेश ने कार्यशाला में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की थीम और आवश्यकताओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। क्षेत्रीय चारा केन्द्र, हिसार के निदेशक डॉ. पीपी सिंह ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर एचएयू के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ एसके पाहुजा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. गुलशन नारंग, सीएसबीएफ, हिसार के निदेशक डॉ. रूंतु गोगोई व हकृवि के चारा अनुभाग के वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	29.8.24	4	4-8

देश में 11.3 हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी : कुलपति

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज प्रतिभागियों के साथ।

जागरण संवाददाता, • हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सीईएएच, बैंगलुरू और रीजनल फोडर स्टेशन द्वारा 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (एएफएमआई-2024) विषय पर बुधवार से कार्यशाला शुरू हुई। पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं। कार्यशाला का शुभारंभ चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त (राष्ट्रीय पशुधन मिशन) डा. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक (सीईएएच) डा. महेश पीएस भी मौजूद रहे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया। कुलपति ने कहा कि कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन है लेकिन हम चारा फसलों की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध करवाकर, चारा उत्पादन की नई-नई तकनीक विकसित करके, विभिन्न क्षेत्रों के लिए चारा फसलों के उचित फसल चक्र विकसित करके, बहुवर्षीय चारा फसलों की खेती करके इसका बेहतर प्रबंधन कर सकते है। इससे न केवल हमारे पशुधन की उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। चारे की कमी के दिनों में साइलेज बनाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है। चारा फसलों की मुख्य चुनौतियों में गुणवत्तापूर्ण बीज की कमी भी है। इसके लिए हमें किसानों व संबंधित अधिकारियों को चारा फसलों के बीज उत्पादन के लिए प्रेरित करना होगा।

डा. महेश ने कार्यशाला में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की थीम और आवश्यकताओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर क्षेत्रीय चारा केन्द्र के निदेशक डा. पीपी सिंह, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा, अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग आदि मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	29.8.24	2	4-8

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों के साथ

देश में 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी

चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं कार्यशाला में

कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन

हिसार, 28 अगस्त (राठी): समय के साथ बदलाव नहीं हुआ तो आने वाले समय में पशुओं के लिए हरे और सूखे चारे को लेकर गंभीर संकट खड़ा हो सकता है। कृषि विशेषज्ञों की मानें तो देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन है। उनका मानना है कि चारा फसलों की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध करवाकर, चारा उत्पादन की नई-नई तकनीक विकसित करके, विभिन्न क्षेत्रों के लिए चारा फसलों के उचित फसल चक्र विकसित करके, बहुवर्षीय चारा फसलों की खेती करके इसका बेहतर प्रबंधन कर सकते है, जिससे न केवल हमारे पशुधन की उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि किसानों की आय में भी बढ़ौतरी होगी। गौरतलब है कि पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य के लिए हरे चारे की उपलब्धता जरूरी है।

हर चारे की उपलब्धता को लेकर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

हो रही है। उसमें यह निष्कर्ष निकल कर सामने आया है। इस कार्यशाला में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं। हकृवि में पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सी.ई.ए.एच., बैंगलुरू और रीजनल फोडर स्टेशन द्वारा 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (ए.एफ.एम.आई.-2024) विषय पर आयोजित इस पांच दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ विवि. के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त (राष्ट्रीय पशुधन मिशन) डॉ. एच.आर. खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक डॉ. महेश भी मौजूद रहे। कार्यशाला में क्षेत्रीय चारा केन्द्र, हिसार के निदेशक डॉ. पी.पी. सिंह, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. गुलशन नारंग, सी.एस.बी.एफ., हिसार के निदेशक डॉ. रून्तु गोगोई व हकृवि के चारा अनुभाग के वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हरे चारे की उपलब्धता बहुत जरूरी: प्रो. काम्बोज

हकृवि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ौतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया। कुलपति ने कहा कि चारे की कमी के दिनों में साइलेज व हे बनाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है। चारा फसलों की मुख्य चुनौतियों में गुणवत्तापूर्ण बीज की कमी भी है। इसके लिए हमें किसानों व संबंधित अधिकारियों को चारा फसलों के बीज उत्पादन के लिए प्रेरित करना होगा। यदि इन विषयों पर पशु चिकित्सकों, संबंधित अधिकारियों एवं किसानों को प्रशिक्षण दिया जाए तो इससे चारा उत्पादन में फायदा हो सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	29.8.24	2	3-5

देश में 11.3 प्रतिशत हरे और 23.2 फीसदी सूखे चारे की कमी : कांबोज

एचएयू में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला में पशु चिकित्सकों ने लिया भाग

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (एएफएमआई-2024) विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला वीरवार से शुरू हुई।

मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। प्रो. कांबोज ने बताया कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। कुलपति ने केंद्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया।

उन्होंने पशु चिकित्सा विज्ञान और कृषि में प्रशिक्षित युवाओं से इस क्षेत्र के बेहतर भविष्य के लिए चारा क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने का आग्रह किया। कार्यशाला का आयोजन पशुपालन व डेयरी विभाग, सीईएएच बंगलूरू व रीजनल फोडर स्टेशन हिसार के सहयोग से किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं।

एचएयू में प्रशिक्षण में भाग ले रहे पशु चिकित्सकों के साथ कुलपति प्रो. कांबोज। स्रोत : संस्थान

प्रो. कांबोज ने कहा कि कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन है, मगर हम चारा फसलों की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध करवाकर, चारा उत्पादन की नई-नई तकनीक विकसित कर, विभिन्न क्षेत्रों के लिए चारा फसलों के उचित फसल चक्र विकसित कर, बहुवर्षीय चारा फसलों की खेती कर इसका बेहतर प्रबंधन कर सकते हैं। इससे न सिर्फ हमारे पशुधन की उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी।

चारे की कमी के दिनों में साइलेज व हे बनाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है। चारा फसलों की मुख्य चुनौतियों में गुणवत्तापूर्ण बीज की कमी भी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	29.8.24	6	3-5

हकृवि में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

पशुओं के स्वास्थ्य के लिए हरे-चारे की उपलब्धता जरूरी : काम्बोज

सच कहूँ न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पशुपालन और डेयरी विभाग, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सीईएएच, बैंगलुरू और रीजनल फोडर स्टेशन, हिसार द्वारा भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति (एएफएमआई-2024) विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं। कार्यशाला का शुभारंभ चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त (राष्ट्रीय पशुधन मिशन) डॉ. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक (सीईएएच) डॉ. महेश पीएस भी मौजूद रहे।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया। उन्होंने पशु चिकित्सा विज्ञान और कृषि में प्रशिक्षित युवाओं से इस क्षेत्र के बेहतर भविष्य के लिए चारा क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने का आग्रह किया।

डॉ. महेश ने कार्यशाला में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की थीम और आवश्यकताओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। क्षेत्रीय चारा केन्द्र, हिसार के निदेशक डॉ. पी.पी. सिंह ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर एचएयू के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ एसके पाहुजा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. गुलशन नारंग, सीएसबीएफ, हिसार के निदेशक डॉ. रून्तु गोगोई व हकृवि के चारा अनुभाग के वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	29.8.24	2	3-8

• हकृवि में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

पशुओं का स्वस्थ बनाए रखने के लिए हरे चारे की उपलब्धता बहुत जरूरी : प्रो. बीआर काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सीईएएच, बैंगलुरू और रीजनल फोडर स्टेशन, हिसार द्वारा 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' एएफएमआई-2024 विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं। कार्यशाला का शुभारंभ हकृवि कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त राष्ट्रीय पशुधन मिशन डॉ. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक सीईएएच डॉ. महेश पीएस भी मौजूद रहे। प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	29-8-24	5	6-8

पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हरे चारे की उपलब्धता बहुत ज़रूरी : प्रो. काम्बोज

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों के साथ।

हिसार, 28 अगस्त (विरेंद्र वर्मा): हकृवि में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सीईएएच, बैंगलुरू और रीज़नल फोडर स्टेशन, हिसार द्वारा 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (एएफएमआई-2024) विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं। कार्यशाला का शुभारंभ चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त (राष्ट्रीय पशुधन मिशन) डॉ. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक (सीईएएच) डॉ महेश पीएस भी मौजूद रहे।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया। उन्होंने पशु चिकित्सा विज्ञान और कृषि में प्रशिक्षित युवाओं से इस क्षेत्र के बेहतर भविष्य के लिए चारा क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने का आग्रह किया।

कुलपति ने कहा कि देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन है लेकिन हम चारा फसलों की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध करवाकर, चारा उत्पादन की नई-नई तकनीक विकसित करके, विभिन्न क्षेत्रों के लिए चारा फसलों के उचित फसल चक्र विकसित करके, बहुवर्षीय चारा फसलों की खेती करके इसका बेहतर प्रबंधन कर सकते है जिससे न केवल हमारे पशुधन की उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। चारे की कमी के दिनों में साइलेज व हे बनाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है। चारा फसलों की मुख्य चुनौतियों में गुणवत्तापूर्ण बीज की कमी भी है। इसके लिए हमें किसानों व संबंधित अधिकारियों को चारा फसलों के बीज उत्पादन के लिए प्रेरित करना होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	28.08.2024	---	--

पशुओं के लिए हरे चारे की उपलब्धता जरूरी : प्रो. काम्बोज

हकृवि में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों के साथ।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (एएफएमआई-2024) विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं। कार्यशाला का शुभारंभ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। प्रो. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया। उन्होंने पशु चिकित्सा विज्ञान और कृषि में प्रशिक्षित युवाओं से इस क्षेत्र के बेहतर भविष्य के लिए चारा क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने का आग्रह किया।

कुलपति ने कहा कि देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन है लेकिन हम चारा फसलों की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध करवाकर, चारा उत्पादन की नई-नई तकनीक विकसित करके, विभिन्न क्षेत्रों के लिए चारा फसलों के उचित फसल चक्र विकसित करके, बहुवर्षीय चारा फसलों की खेती करके इसका बेहतर प्रबंधन कर सकते है जिससे न केवल हमारे पशुधन की उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। चारे की कमी के दिनों में साइलेज व हे बनाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	28.08.2024	---	--

| हिसार: नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी संभव : प्रो. बीआर कम्बोज

हकृवि में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

हिसार, 28 अगस्त (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पशुपालन एवं डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सीईएएच, बैंगलुरू और रीज़नल फोडर स्टेशनकी ओर से 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (एएफएमआई-2024) विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं।

कार्यशाला का शुभारंभ हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. बीआर कम्बोज ने बुधवार को किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त (राष्ट्रीय पशुधन मिशन) डॉ. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक (सीईएएच) डॉ. महेश पीएस भी मौजूद रहे। कुललपति कंबोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया। उन्होंने पशु चिकित्सा विज्ञान और कृषि में प्रशिक्षित युवाओं से इस क्षेत्र के बेहतर भविष्य के लिए चारा क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने का आग्रह किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	28.08.2024	---	--

पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हरे चारे की उपलब्धता बहुत जरूरी : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

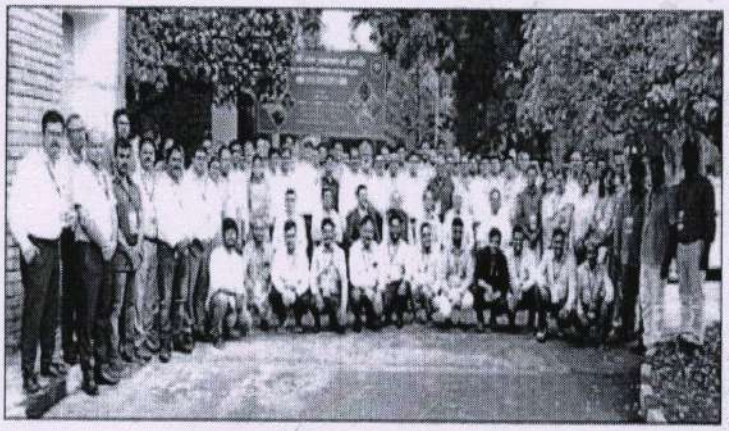

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पशुपालन और डेयरी विभाग, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरिंग मंत्रालय भारत सरकार के दो अग्रणी संस्थानों सीईएएच, बैंगलुरू और रीजनल फोडर स्टेशन, हिसार द्वारा 'भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति' (एएफएमआई-2024) विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं। कार्यशाला का शुभारंभ चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त (राष्ट्रीय पशुधन मिशन) डॉ. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक (सीईएएच) डॉ महेश पीएस भी मौजूद रहे।

प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। उन्होंने पशु पोषण के महत्व पर पशुपालकों में जागरूकता पैदा करना, पशुधन स्वास्थ्य, चारा उत्पादन डेयरी और चारा उत्पादों की आपूर्ति से जुड़े हित धारकों के लिए एक साझा मंच प्रदान करने पर भी बल दिया। उन्होंने पशु चिकित्सा विज्ञान और कृषि में प्रशिक्षित युवाओं से इस क्षेत्र के बेहतर भविष्य के लिए चारा क्षेत्र में उद्यमिता अपनाने का आग्रह किया।

कुलपति ने कहा कि देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। कृषि भूमि सीमित होने के कारण चारा फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाना कठिन है लेकिन हम चारा फसलों की उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध करवाकर, चारा उत्पादन की नई-नई तकनीक विकसित करके, विभिन्न क्षेत्रों के लिए चारा फसलों के उचित फसल चक्र विकसित करके, बहुवर्षीय चारा फसलों की खेती करके इसका बेहतर प्रबंधन कर सकते है जिससे न केवल हमारे पशुधन की उत्पादकता बढ़ेगी बल्कि किसानों की आय में भी बढ़ोतरी होगी। चारे की कमी के दिनों में साइलेज व हे बनाकर पशुओं को खिलाया जा सकता है। चारा फसलों की मुख्य चुनौतियों में गुणवतापूर्ण बीज की कमी भी है। इसके लिए हमें किसानों व संबंधित अधिकारियों को चारा फसलों के बीज उत्पादन के लिए प्रेरित करना होगा। यदि इन विषयों पर पशु चिकित्सकों, संबंधित अधिकारियों एवं किसानों को प्रशिक्षण दिया जाए तो इससे चारा उत्पादन में फायदा हो सकता है। गौरतलब है कि पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य के लिए वर्षभर हरे चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करना अति महत्वपूर्ण है।

डॉ. महेश ने कार्यशाला में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की थीम और आवश्यकताओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। क्षेत्रीय चारा केन्द्र, हिसार के निदेशक डॉ. पी.पी. सिंह ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर एचएयू के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ एसके पाहुजा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. गुलशन नारंग, सीएसबीएफ, हिसार के निदेशक डॉ. रून्तु गोगोई व हकृवि के चारा अनुभाग के वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	29-8-24	4	6-8

दैनिक भास्कर

मूंग, उड़द व लोबिया में विषाणु रोगों से रुक जाती है बढ़वार, रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर कर दें नष्ट

बारिश के दिनों में फसलों का करते रहें निरीक्षण, न होने जलभराव

भास्कर न्यूज | हिसार

मूंग, उड़द व लोबिया में विषाणु रोगों के प्रकोप से पौधों की बढ़वार रुक जाती है और पत्तियां पीली, चितकबरी या झुर्रीदार हो जाती हैं। इनकी रोकथाम के लिए शुरू में ही रोगी पौधों को निकालकर नष्ट कर दें। ध्यान रहे कि उखाड़ते समय रोगी पौधों का संपर्क स्वस्थ पौधों से न होने पाए।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि विषाणु रोग फैलाने वाली सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए 400 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ईसी या 250 मिली रोगोर 30 ईसी को 250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ फसल पर 10-15 दिन के अंतर पर छिड़कें। उपर्युक्त कीटनाशक दूसरे

लोबिया के खेत की फोटो।

रस चूसने वाले कीड़ों के लिए भी हैं। खरपतवारों की समय पर रोकथाम करने के लिए निराई करें। प्रायः पत्तों पर लाल व भूरे रंग के कोणदार धब्बे जिनके बीच का रंग सलेटी होता है बन जाते हैं। बीमारी की रोकथाम के लिए लक्षण दिखते ही 600-800 ग्राम ब्लाइटॉक्स-50 का 200 लीटर पानी में घोल बनाकर एक एकड़ फसल पर छिड़काव करें और 10 दिन के अंतर पर आवश्यकतानुसार छिड़काव दोहराएं।

मूंगफली: पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. राकेश के अनुसार घास-फूस को नष्ट करने के लिए निराई करें और आवश्यकता अनुसार पानी लगाएं। मूंगफली में टिक्का नामक बीमारी के आक्रमण से पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं। इनके नियंत्रण के लिए लक्षण दिखते ही 400 ग्राम मैन्कोज़ेब या 200 ग्राम बाविस्टीन को 200 लीटर पानी में घोल बनाकर एक एकड़ की फसल पर 10-15 दिन के अंतर पर दो बार छिड़कें। डॉ. सतपाल ने बताया कि बारिश के दिनों में खेत का निरीक्षण करते रहें और जल भराव न होने दें। अन्य फसलों के मुकाबले दलहनी फसलें जल भराव के प्रति अधिक संवेदनशील हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	29.08.2024	---	--

कहा-पशुओं के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए हरे चारे की उपलब्धता बहुत जरूरी

हकृवि में पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी

हिसार, 28 अगस्त : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भारत में चारा प्रबंधन में प्रगति विषय पर पांच दिवसीय पहली राष्ट्रीय स्तर की प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों के चारा विशेषज्ञों सहित 14 राज्यों के 71 पशु चिकित्सक भाग ले रहे हैं। कार्यशाला का शुभारंभ चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किया। कार्यक्रम में संयुक्त आयुक्त डा. एचआर खन्ना व संयुक्त आयुक्त और निदेशक डॉ महेश पीएस भी मौजूद रहे। इस मौके प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि नई किस्मों एवं तकनीकों को अपनाकर चारा उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकती है। उन्होंने केन्द्र एवं राज्य सरकार के चारा बीज उत्पादन और संबंधित गतिविधियों में शामिल पशु चिकित्सा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने पर बल दिया। कुलपति ने कहा कि देश में इस समय 11.3 प्रतिशत हरे व 23.2 प्रतिशत सूखे चारे की कमी है। डॉ. महेश ने कार्यशाला में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की थीम और आवश्यकताओं के बारे में जानकारी दी। क्षेत्रीय चारा केंद्र, हिसार के निदेशक डॉ. पी.पी. सिंह ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर एचएयू के कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ एसके पाहुजा, अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. गुलशन नारंग, सीएसबीएफ, हिसार के निदेशक डॉ. रून्तु गोगोई व हकृवि के चारा अनुभाग के वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों के साथ।